पृथ्वी का अंत कब हो रहा है ?

कितना बड़ा प्रश्न

विज्ञान कहता है पृथ्वी पुरानी हो रही है और एक दिन घिस जायेगी । कितने वर्ष लगेंगे ? पवित्र शास्त्र क्या कहता है ?

बहुत से लोग बुद्धि पाने के लिये विज्ञान का अध्ययन करते हैं, अन्य लोग दर्शन शास्त्र और इतिहास का अध्ययन करते हैं, परन्तु अगर वे पवित्र शास्त्र में दी गई भविष्य-द्वाणी पर विश्वास नहीं करते हैं तो क्या वे सच्ची बुद्धि को जान सकते हैं ?

क्या आप जानते थे कि परमेश्वर की इच्छा है कि वह अपने भेदों को अपने वचन द्वारा प्रगट करें ? सब से पहिले पवित्र शास्त्र हम से कहता हैं कि परमेश्वर की इच्छा है, कि संसारिक बातों में लगे हुओं को असमंजस में डालना ।

दूसरा, पवित्र शास्त्र हमसे कहता है कि केवल परमेश्वर ही सब बुद्धि और ज्ञान रखता है । तीसरा, परमेश्वर अपने भेद हम पर प्रकट करना चाहता है ।

१ कुरिन्थियों ३:१८-२० में हम पढ़ते हैं, "कोई अपने आप को धोखा न दें : यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए । क्यों कि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है । और फिर प्रभु ज्ञानियों की चिंताओं को जानता है, कि व्यर्थ है ।"

१ कुरिन्थियों १:२१ में हम पढ़ते, "क्यों कि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे ।"

सामान्यतः इस संसार के लोग असमंजस या भ्रम में पड़े हुए हैं । बहुत अधिक लोग परमेश्वर के वचन में दी गई शिक्षा और भविष्यद्वाणियों को नहीं समझ सकते, क्यों ?

इसलिये कि वे नहीं जानते की उनके प्रश्नों के उत्तर पवित्र शास्त्र में हैं । इसलिये भी कि पवित्र शास्त्र को वे बुद्धि और समझ के लिये नहीं पढ़ते । मनुष्य प्राणी को ऐसे संसारिक मनुष्यों की ओर न देखना चाहिये जिनका विश्वास परमेश्वर पर नहीं है । उन्हें परमेश्वर तथा उसके वचन की ओर देखना चाहिये । अगर वे परमेश्वर की ओर देखेंगे तो उन्हें प्रकाश मिलेगा ।

अब, क्या परमेश्वर चाहता है कि हम ऐसे प्रश्नों के उत्तर जाने जैसे पृथ्वी का अंत कब हो रहा है ?

अवश्य वह चाहता है । कुलुस्सियों २:२-३ में हम पढ़ते हैं, "ताकि उन के मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को पहचान लें । जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं ।

क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर है ।

हां, अवश्य करते हैं । परमेश्वर सब कुछ जानता और समझता है, वरना वह परमेश्वर नहीं है । वह भविष्य को भी उसी प्रकार जानता है जैसे भूत काल को । अगर नहीं जानता, तो वह परमेश्वर नहीं । कुलुस्सियों १:१६-१७ में हम

पढ़ते हैं, "क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं, और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब उसी में स्थिर रहती हैं ।" इस परमेश्वर ने हमें **अपना वचन** अर्थात् **पवित्र शास्त्र** दिया है, कि उसकी आश्चर्य की बातें हम पर प्रगट हों । कितनी रोमांचक बात है कि हम पूरे विश्वास से भरोसा करें कि परमेश्वर का वचन सत्य है । रोमियों ३:४ में हम पढ़ते हैं, "·········परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे·········।" हम निश्चित जान सकते हैं कि जो कुछ परमेश्वर के वचन से असहमत है वह झूठ है । परमेश्वर के वचन में इस प्रकार का विश्वास हम को भटकने नहीं देगा । पवित्र शास्त्र पर पक्का विश्वास रखने से वह हमें उस ठोस चट्टान यीशु ख्रीष्ट में रख देता है । भजन संहिता २५:१४ में हम पढ़ते हैं, "यहोवा के भेद को वही जानते हैं, जो उस से डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा ।" यहाँ परमेश्वर एक स्पष्ट वक्तव्य करता है । वह अपना धन उन लोगों को दिखाएगा और उन पर प्रगट करेगा जो उसका भय मानते हैं । इस वचन में भय मानना, आदर करने के अर्थ में आया है । इफिसियों ३:८,१० में पौलुस प्रेरित कहते हैं, "मुझ पर, जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्य जातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था । ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए ।"

परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण इन बातों को पवित्र शास्त्र में दर्शाया है ।

उसकी भविष्यद्वाणियों को जानने के लिये हमें उसके वचन का अध्ययन करना ही होगा । अगर कोई व्यक्ति अध्ययन नहीं करता है, तो वह भ्रम में रहेगा । २ तीमुथियुस २:१५ में लिखा है, "अपने आपको परमेश्वर

का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

परमेश्वर यह भी चाहता है, कि हम जाने पवित्र आत्मा का क्या अर्थ है।

इसीलिये पवित्र आत्मा हमारे मनों को प्रकाशित करने के लिये भेजा गया है। १ कुरिन्थियों २:९-१० में लिखा है, परन्तु जैसा लिखा है, "कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की है। परंतु पर पमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।" इसलिये अब हम जानते हैं परमेश्वर ने न केवल पवित्र मनुष्यों को पवित्र आत्मा द्वारा क्या कहना दिखाया और पवित्र शास्त्र में लिखवाया परन्तु वह चाहता है कि हम उसे पढ़ें और उसका अध्ययन करें। वह इतना अधिक चाहता है कि हम उसे समझें कि समझने में हमारी सहायता करने के लिये उसने अपना पवित्र आत्मा भेजा।

परमेश्वर का वचन निश्चित हम से बोल रहा है, कि संसार का अन्त कब हो रहा है।

प्रकाशित वाक्य २० वां अध्याय उन घटनाओं को सिलसिले वार बताता है जो होने वाली हैं। अन्त के समय यह बातें जिनका वर्णन इस अध्याय में किया गया है, होंगी तब पृथ्वी का अन्त होगा। सब से पहले, यीशु अपने निज

लोगों को पृथ्वी से उठा लेने के लिये आ रहा है। (इस पर हम आगे अभ्यास नंबर ११ में चर्चा करेंगे)। जो छोड़ दिये जावेंगे उन्हें एक भयंकर न्याय के समय से गुज़रना होगा, जो "महाक्लेश" कहलाता है। इसके पश्चात् यीशु अपने संतों के साथ इस पृथ्वी पर वापिस लौटेगा। इसके बाद प्रकाशित वाक्य २०:६ कहता है, कि वे, जिनका उद्धार हो गया है, (वे) परमेश्वर के लोग, उसके साथ एक हजार वर्ष राज करेंगे। वचन १२-१५ में लिखा है कि एक हजार वर्ष के अन्त में सारे मरे हुए लोग जीवित किये जाएंगे। प्रत्येक का न्याय परमेश्वर करेगा। प्रत्येक जिसका नाम परमेश्वर की किताब में नहीं लिखा है, सो अग्नि की झील में फेंक दिया जायेगा। १ कुरिन्थियों १५:२४ में लिखा है कि, जब यह बातें पूरी होंगी तब पृथ्वी का अन्त या वह समय जिसके विषय में हम जानते हैं। आयेगा, तब परमेश्वर नया आकाश और नई पृथ्वी का सृजन करेगा। प्रकाशित वाक्य २१:१ में लिखा हैं, "फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी..............।" हम अब किसी भी क्षण यीशु के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके आने के लिये क्या आप तैयार हैं ?

अन्य शास्त्र भाग जो आप पढ़ सकते हैं वे यह हैं, १ थिस्सलुनीकियों ४:१६, १ कुरिन्थियों १५:५१-५७, प्रकाशित वाक्य १९:११-१६ और प्रकाशित वाक्य ३:११-१३।

सामुदायिक सेवा कार्यक्रम

अभ्यास नंबर १ २००१

अनुवादक : **श्रीमती पी. तिमोथी, जबलपुर**

Apostolische Pfingstgemeinde Mannheim
Friedelsheimerstr. 18-20
D - 68199 Mannheim (Neckarau) /Germany
Pastor Raymond Wey
Assistent Pastor Sascha Wey
www.jesus-is-god.de, www.v-p-m.de

पृथ्वी का अंत

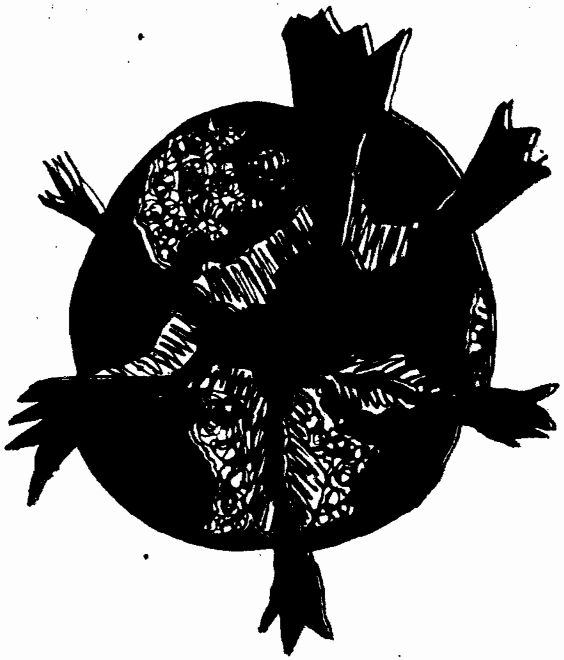

कब हो रहा है ?